राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय के अन्तर्गत
स्कूल स्तर गायन एवं स्वर वाद्य पाठ्यक्रम

परिशिष्ट क्रमांक	पाठ्यक्रम	पृष्ठ संख्या
	स्कूल स्तर के परीक्षा अंकन योजना	
परिशिष्ट क.–01	प्रवेशिका सर्टिफिकेट इन परफार्मिंग आर्ट (पी.सी.पी.ए.) से संगीतिका सीनियर डिप्लोमा इन परफार्मिंग आर्ट (एस.एस..डी.पी.ए.)	02–04
	स्कूल स्तर के पाठ्यक्रम	
परिशिष्ट क.–02	**प्रवेशिका** इन परफार्मिंग आर्ट (पी.सी.पी.ए.)– प्रथम वर्ष गायन एवं स्वर वाद्य	05–06
परिशिष्ट क.–03	**प्रवेशिका इन परफार्मिंग आर्ट (पी.सी.पी.ए.)–** अंतिम वर्ष गायन एवं स्वर वाद्य	07–08
परिशिष्ट क.–04	मध्यमा डिप्लोमा इन परफार्मिंग आर्ट (एम.डी.पी.ए.)– प्रथम वर्ष गायन एवं स्वर वाद्य	09–10
परिशिष्ट क.–05	मध्यमा डिप्लोमा इन परफार्मिंग आर्ट(एम.डी.पी.ए.)–अंतिम वर्ष गायन एवं स्वर वाद्य	11–12
परिशिष्ट क.–06	विद डिप्लोमा इन परफार्मिंग आर्ट (वी.डी.पी.ए.)–प्रथम वर्ष गायन एवं स्वर वाद्य	13–15
परिशिष्ट क.–07	विद डिप्लोमा इन परफार्मिंग आर्ट (वी.डी.पी.ए.)–अंतिम वर्ष गायन एवं स्वर वाद्य	16–18
परिशिष्ट क.–08	कला रत्न डिप्लोमा इन परफार्मिंग आर्ट (के.आर.डी.पी.ए.)–प्रथम वर्ष गायन एवं स्वर वाद्य	19–21
परिशिष्ट क.–09	कला रत्न डिप्लोमा इन परफार्मिंग आर्ट (के.आर.डी.पी.ए.)–अंतिम वर्ष गायन एवं स्वर वाद्य	22–25
परिशिष्ट क.–10	संगीतिका जूनियर डिप्लोमा इन परफार्मिंग आर्ट (एस.जे.डी.पी.ए.)– (सुगम संगीत)	26–27
परिशिष्ट क.–11	संगीतिका सीनियर डिप्लोमा इन परफार्मिंग आर्ट (एस.एस.डी.पी.ए.)– (सुगम संगीत)	25–29

परिशिष्ट क.–1

राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय के अन्तर्गत स्कूल स्तर गायन एवं स्वर वाद्य पाठ्यक्रम अंक विभाजन

MARKING SCHEME OF SCHOOL LEVEL

Praveshika Certificate in performing art- (P.C.P.A.)

Previous

PAPER	SUBJECT- VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)	MAX	MIN
1	**PRACTICAL- I** **Choice** Rag Demonstration & viva	100	33
2	**PRACTICAL - II** National Song & Patriotic Song. **etc**	100	33
	GRAND TOTAL	**200**	**66**

Praveshika Certificate in performing art- (P.C.P.A.)- (Final)

PAPER	SUBJECT- VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)	MAX	MIN
1	**Theory** Basic Music -Theory	100	33
2	**PRACTICAL-** **Choice** Rag Demonstration & viva	100	33
	GRAND TOTAL	**200**	**66**

Madhyama diploma in performing art (M.D.P.A.)

previous

PAPER	SUBJECT- VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)	MAX	MIN
1	**Theory** Music -Theory	100	33
2	**PRACTICAL-** **Choice** Rag Demonstration & viva	100	33
	GRAND TOTAL	**200**	**66**

Madhyama diploma in performing art (M.D.P.A.)- (final)

PAPER	SUBJECT- VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)	MAX	MIN
1	**Theory** Music -Theory	100	33
2	**PRACTICAL-** **Choice** Rag Demonstration & viva	100	33
	GRAND TOTAL	**200**	**66**

Vid diploma in performing art (V.D.P.A.)
previous

PAPER	SUBJECT- VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)	MAX	MIN
1	**THEORY-I** **Music -Theory**	100	33
2	**Theory-II** **Applied principals of Music**	100	33
3	**PRACTICAL-** **Choice** Rag Demonstration & viva	100	33
	GRAND TOTAL	**300**	**99**

Vid diploma in performing art (V.D.P.A.) - (final)

PAPER	SUBJECT- VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)	MAX	MIN
1	**THEORY-I** **Music -Theory**	100	33
2	**Theory-II** **Applied principals of Music**	100	33
3	**PRACTICAL-** **Choice** Rag Demonstration & viva	100	33
	GRAND TOTAL	**300**	**99**

kala Ratna diploma in performing art (K.R.D.P.A.)
previous

PAPER	SUBJECT- VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)	MAX	MIN
1	**Theory-I** history and principals of Music theory	100	33
2	**Theory-II** Essay, COMPOSITION and raag discription	100	33
3	**PRACTICAL** – I Rag description viva	100	33
4	**PRACTICAL-II** **Choice Rag** **STAGE PERFORMANCE**	100	33
	GRAND TOTAL	**400**	**132**

kala Ratna diploma in performing art (K.R.D.P.A.) -(final)

PAPER	SUBJECT- VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)	MAX	MIN
1	**Theory-I** history and principals of Music theory	100	33
2	**Theory-II** Essay, COMPOSITION and raag discription	100	33
3	**PRACTICAL – I** Rag description viva	100	33
4	**PRACTICAL-II Choice Rag STAGE PERFORMANCE**	100	33
	GRAND TOTAL	**400**	**132**

Sangeetika juniour diploma in performing art (S.J.D.P.A.)

PAPER	SUBJECT- VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)	MAX	MIN
1	**Theory** Music -Theory	100	33
2	**PRACTICAL-** Demonstration & **viva**	100	33
	GRAND TOTAL	**200**	**66**

Sangeetika senior diploma in performing art (S.S.D.P.A.)

PAPER	SUBJECT- VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)	MAX	MIN
1	**Theory** Music -Theory	100	33
2	**PRACTICAL-** Demonstration & **viva**	100	33
	GRAND TOTAL	**200**	**66**

Syllabus Designed By Dr. Sanjay Kumar Singh

H.O.D.

परिशिष्ट क्र.–02

राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय के अन्तर्गत स्कूल स्तर गायन एवं स्वर वाद्य पाठ्यक्रम

Praveshika Certificate in performing art- (P.C.P.A.)

प्रथम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

प्रायोगिक:-1 प्रदर्शन एवं मौखिक

पूर्णांक : 100

1. संगीत की परिभाषा व सामान्य परिचय।
2. स्वर (शुद्ध, विकृत), सप्तक (मंद्र, मध्य, तार), थाट, वर्ण, अलंकार (पल्टा), आरोह–अवरोह, पकड व राग की परिभाषाऐं।
3. यमन, भैरव व भूपाली रागों के थाट, जाति, लगने वाले स्वर, वादी–संवादी एवं2 गायन समय की जानकारी।
4. सरल अलंकारों का ज्ञान।
5. त्रिताल, कहरवा और दादरा तालों का परिचय एवं ज्ञान।
6. भातखण्डे स्वरलिपि एवं ताल चिन्हों का ज्ञान।
7. अपने वाद्य का साधारण ज्ञान।
8. बिलावल, भैरव व कल्याण थाट में दस–दस अलंकारों का गायन।
9. यमन, भैरव और बिलावल रागों मे स्वरमालिका, लक्ष्णगीत, मध्य लय ख्याल का गायन।

   अपने वाद्य पर इन रागों में मध्य लय की रचना/गत का (स्थायी, अंतरा सहित) वादन।

Praveshika Certificate in performing art- (P.C.P.A.)

प्रथम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

प्रायोगिकः- 2 प्रदर्शन एवं मौखिक

पूर्णांक : 100

राष्ट्रीय गीत ,राष्ट्र गान, वन्दे मातरम तथा कोई प्रार्थना, वंदना अदि का गायन अथवा वाद्य के विद्यार्थियों के लिए धुन वादन i

आवश्यक निर्देश–: केंद्र एवं प्रादेशिक शासन प्रशासन द्वारा राष्ट्र गान, वन्दे मातरम को शिक्षण संस्थाओ में स्थान भी दिया जा रहा है इस लिए विद्यार्थियों को गाने / बजाने आना चाहिए ।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 1 से 3 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 1 एवं 2 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. संगीत शास्त्र – श्री एम. बी. मराठे
7. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा

परिशिष्ट क्र.–3

Praveshika Certificate in performing art- (P.C.P.A.)

अंतिम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

संगीत शास्त्र

समय 3 घण्टे पूर्णांक : 100

1 संगीत शब्द की व्याख्या एवं स्पष्टीकरण, संगीत की पद्धतियॉ (उत्तर भारतीय एवं कर्नाटक) की जानकारी। संगीत के प्रकारों (शास्त्रीय, भाव, चित्रपट एवं लोक संगीत आदि) का परिचय।

2 हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के दस थाटों के नाम एवं उनके स्वरों की जानकारी । थाट और राग का तुलनात्मक अध्ययन। आश्रय रागों की संक्षिप्त जानकारी।

3 निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय विवरण– राग यमन, भैरव, भूपाली, खमाज, काफी।

4 लय (विलम्बित, मध्य, द्रुत, दुगुन) मात्रा, विभाग, खाली,, भरी, सम एवं आवर्तन की जानकारी। त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा और झपताल तालों का शास्त्रीय परिचय एवं उनका तालिपि में लेखन।

5 पं. भातखण्डे जी की स्वरलिपि पद्धति का सामान्य ज्ञान। अपने वाद्य का संक्षिप्त परिचय एवं उसके विभिन्न अवयवों की जानकारी।

Praveshika Certificate in performing art- (P.C.P.A.)

अंतिम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

प्रायोगिकः- प्रदर्शन एवं मौखिक

समय – 20 मिनिट पूर्णांक :100

1 पिछले वर्ष के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।

2 कल्याण, भैरव, खमाज एवं काफी थाटों में दस–दस अलंकारों का गायन।

3 पाठ्यक्रम के राग– यमन, भैरव, खमाज, काफी एवं भूपाली।

4 पाठ्यक्रम के रागों में स्वरमालिका, लक्षण गीत। (गायन के विद्यार्थियों के लिये)

5 पाठ्यक्रम के एक राग में विलम्बित रचना। (ख्याल का गायन अथवा मसीतखानी गत का वादन)

6 पाठ्यक्रम के रागों में मध्यलय की एक रचना (ख्याल गायन अथवा रजाखानी गत का पॉच– पॉच तानों/तोडों सहित वादन)

7 आकाशवाणी द्वारा मान्य जनगणमन का स्वर लय में गायन/वादन।

8 तीनताल, एकताल, कहरवा, दादरा व झपताल तालों का हाथ से ताली देकर दुगुन सहित प्रदर्शन।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 1 से 3 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 1 से 2 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. संगीत शास्त्र – श्री एम. बी. मराठे
7. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा

परिशिष्ट क्र.–04

Madhyama diploma in performing art (M.D.P.A.)

प्रथम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

संगीत शास्त्र

समय 3 घण्टे **पूर्णांक :100**

1. प्रथमा के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।
2. वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी, मींड, सूत, घसीट, आंदोलन, कण, बोल–आलाप, तान, बोल–तान, राग की जाति (औडव, षाडव, सम्पूर्ण) का सामान्य परिचय। ध्वनि, नाद एवं श्रुति की परिभाषा, 22 श्रुतियों के नाम एवं उनमें शुद्ध विकृत 12 स्वरों की स्थापना।
3. गीत के अवयव (स्थायी, अंतरा, संचारी, आभोग) ध्रुपद, धमार, ख्याल, तराना, लक्षणगीत, सरगम (स्वरमालिका) मसीतखानी एवं रजाखानी गतों की संक्षिप्त जानकारी।

4. पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर एवं पं. विष्णु नारायण भातखण्डे की संक्षिप्त जीवनी एवं सांगीतिक योगदान। पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी की स्वरलिपि पद्धति का अध्ययन।

5 निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय परिचय :–

आसावरी, अल्हैया बिलावल, दुर्गा, (बिलावल थाट) वृंदावनी सारंग, देस एवं तिलक कामोद।

6 पाठ्यक्रम के उपर्युक्त रागों की बंदिश का स्वरलिपि में लेखन।

नोट : यमन एवं भैरव की बन्दिश का स्वरलिपि में लेखन एवं उनका शास्त्रीय परिचय शास्त्र की लिखित परीक्षा में नहीं पूछा जावेगा।

7. ताल के दुगुन एवं चौगुन लय की सामान्य जानकारी। त्रिताल, एकताल, झपताल, चौताल, सूलताल, रूपक एवं तिलवाडा ताल के ठेकों का शास्त्रीय परिचय एवं उनका तालिपि में लेखन।

Madhyama diploma in performing art (M.D.P.A.)

प्रथम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

प्रायोगिकः- प्रदर्शन एवं मौखिक

समय– 30 मिनिट पूर्णांक : 100

1 पिछले वर्ष के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।

2 पाठ्यक्रम के राग – आसावरी, अल्हैया बिलावल, दुर्गा (बिलावल थाट), वृन्दावनी सारंग, देस एवं तिलक कामोद।

(अ) पाठ्यक्रम के रागों में स्वरमालिका, लक्षणगीत का गायन। (गायन के विद्यार्थियों हेतु)

(ब) पाठ्यक्रम के दो रागों में विलम्बित ख्याल गायन। (वाद्य के विद्यार्थियों हेतु मसीतखानी गत का आलाप तानों एवं तोडे सहित प्रदर्शन)

(स) पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में मध्यलय रचना (ख्याल गायन), रजाखानी गत का आलाप एवं पॉच तानों एवं तोडे सहित प्रदर्शन।

(द) पाठ्यक्रम के किसी एक राग में ध्रुपद (दुगुन और चौगुन सहित) एक तराना तथा एक भजन अथवा अपने वाद्य पर तीनताल से पृथक अन्य किसी ताल में मध्यलय की रचना का प्रदर्शन।

1 आकाशवाणी द्वारा मान्य वन्दे मातरम् तथा देशभक्ति गीत का स्वरलय में गायन।
वाद्य के विद्यार्थियों द्वारा इनका वादन तथा किसी धुन का प्रदर्शन।

2 पाठ्यक्रम के निम्नलिखित तालों का हाथ से ताली देकर दुगुन सहित प्रदर्शन।

तीनताल, एकताल, झपताल, चौताल, सूलताल, रूपक एवं तिलवाडा

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 1 से 3 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 1 से 2 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. संगीत शास्त्र – श्री एम. बी. मराठे
7. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा

परिशिष्ट क्र.–05

Madhyama diploma in performing art (M.D.P.A.)

अंतिम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

संगीत शास्त्र

समय 3 घण्टे **पूर्णांक : 100**

1 पिछले पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।

2 तानों के प्रकार। तान व तोडा की परिभाषा तथा तान एवं तोडा में अंतर।

पूर्वराग, उत्तरराग, सन्धिप्रकाश एवं परमेल प्रवेशक रागों की संक्षिप्त जानकारी।

3 पं. भातखण्डे स्वरलिपि **तथा** ताल **लिपि एवं** पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी की स्वरलिपि पद्धति का

तुलनात्मक अध्ययन।

4 गायक अथवा वादक (तंत्री वादक/सुषिर वादक) के गुण दोषों का परिचय।

5 स्वामी हरिदास, मानसिंह तोमर, तानसेन तथा अमीर खुसरो तथा का जीवन परिचय एवं उनका सांगीतिक योगदान।

6 निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय परिचय :–

बिहाग, केदार, हमीर, बागेश्री, भीमपलासी, जौनपुरी, भैरवी एवं तोडी

7 पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में मध्य लय रचनाओं का भातखण्डे स्वरलिपि में लेखन।

8 चौताल, तीव्रा, तिलवाडा, दीपचन्दी, झूमरा, आडाचौताल और धमार के ठेकों का ठाह, दुगुन एवं चौगुन लयों में ताललिपि में लिखना।

Madhyama diploma in performing art (M.D.P.A.)

अंतिम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

प्रायोगिकः - प्रदर्शन एवं मौखिक

समयः– 30 मिनिट पूर्णांक–100

1. पिछले वर्ष के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।
2. पाठ्यक्रम के राग– विहाग, केदार, हमीर, बागेश्री, भीमपलासी, जौनपुरी, भैरवी तथा तोड़ी,।
   (अ) पाठ्यक्रम के रागों में स्वरमालिका लक्षणगीत का गायन। (गायन विद्यार्थियों हेतु)
   (ब) पाठ्यक्रम के किन्ही चार रागों में विलम्बित रचना (ख्याल/मसीतखानी) का आलाप, तानों सहित प्रदर्शन।
   (स) पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में मध्यलय रचना (ख्याल/रजाखानी गत) का आलाप एवं पांच तानों सहित प्रदर्शन।
   (द) पाठ्यक्रम के किसी एक राग में ध्रुपद (दुगुन और चौगुन सहित) एक धमार, दो तराने तथा एक भजन अथवा अपने वाद्य पर तीनताल से पृथक अन्य ताल में एकमध्य लय रचना का तानों सहित प्रदर्शन।
3. देशभक्ति गीत का अथवा किसी सुगम संगीत की रचना का स्वरलय में गायन/वादन अथवा अपने वाद्य पर धुन का प्रदर्शन।
4. पाठ्यकम के निम्नलिखित तालों का हाथ से ताली देकर ठाह, दुगुन एवं चौगुन सहित प्रदर्शन। चौताल, तीव्रा, तिलवाडा, दीपचन्दी, झूमरा, आड़ाचौताल और धमार।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 1 से 3 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 1 से 2 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. संगीत शास्त्र – श्री एम. बी. मराठे
7. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा

परिशिष्ट क्र.–06

Vid diploma in performing art (V.D.P.A.)

प्रथम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

प्रथम प्रश्न–पत्र (संगीत शास्त्र)

समय – 3 घण्टे पूर्णांक :100

1. ध्वनि (सांगीतिक ध्वनि और शोर) नाद और उसके प्रकार, नाद की तीव्रता (Intensity) तारता (Pitch) गुण (Timbre) कालमान (Duration) कंपन (Vibration) आवृत्ति (Frequency) कम्पविस्तार (Amptitude) डोल (Beat) उपस्वर (Overtone) सेमीटोन, माईनर टोन, मेजर टोन का परिचय।
2. डायटोनिक स्केल, नेचुरल स्केल, टेम्पर्ड स्केल का सामान्य अध्ययन।
3. हिन्दुस्तानी व कर्नाटक सप्तकों का अध्ययन। ग्रह आदि दस राग लक्षणों का परिचय।
4. राग विस्तार में वादी, संवादी, अनुवादी एवं विवादी अल्पत्व, बहुत्व एवं न्यास स्वरों का महत्व। गमक के लक्षण एवं प्रकारों का अध्ययन।
5. भारतीय मतानुसार वाद्य वर्गीकरण का सामान्य परिचय। गायन के परीक्षार्थियों के लिये तानपुरा और वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये अपने–अपने वाद्य का संक्षिप्त ऐतिहासिक अध्ययन।
6. सदारंग–अदारंग, गोपाल नायक, भास्कर बुआ बखले, उस्ताद अब्दुल करीम खॉ, बाबा उस्ताद अलाउद्दीन खॉ, उस्ताद हाफिज अली खॉ, पं. राजा भैया पूछवाले का जीवन परिचय एवं उनका सांगीतिक योगदान।

Vid diploma in performing art (V.D.P.A.)

प्रथम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

द्वितीय प्रश्न पत्र

संगीत के क्रियात्मक सिद्धांत

समय – 3 घण्टे पूर्णांक :100

1. पाठ्यक्रम के निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय परिचय एवं पिछले पाठ्यक्रमों के रागों से इनका तुलनात्मक अध्ययन। मालकौंस, देशकार, कामोद, रामकली, मारवा, बहार, शंकरा, पूर्वी एवं शुद्धकल्याण।
2. निम्न अ एवं ब को भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लिखने का अभ्यास।

   (अ) गायन के परीक्षाथियों के लिये –

   पाठ्यक्रम के चार रागों में (आलाप तथा तानों साहित) विलम्बित रचना।

   पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक मध्यलय ख्याल का गायन (आलाप एवं तानों सहित)। एक ध्रुपद, एक धमार (दुगुन और चौगुन) एवं एक तराना।

   (ब) वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये –

   पाठ्यक्रम के चार रागों में एक–एक विलम्बित गत अथवा एक मसीतखानी गत।

   पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक मध्यलय अथवा रजाखानी गत अथवा द्रुत लय की रचना (आलाप तथा तानों/तोडों सहित)

   पाठ्यक्रम के किसी एक राग में तीनताल से पृथक अन्य ताल में रचना का लेखन।

3 मींड, सूत (अनुलोम–विलोम) मुर्की, खटका, घसीट, जमजमा, कृन्तन, गमक, झाला, तोडा, आविर्भाव, तिरोभाव की सामान्य जानकारी। गायन के संदर्भ में आलाप, नोम–तोम का आलाप तथा बोल आलाप एवं स्वर वाद्य के संदर्भ में आलाप, जोड, झाला का अध्ययन। गायन–वादन में प्रचलित आलापचारी की जानकारी।

4. निम्नलिखित तालों को बोल एवं ताल चिन्हों के साथ ठाह, तिगुन और चौगुन में लेखन।

   तीनताल, एकताल, चौताल, झपताल, धमार, सूलताल, रूपक, तीव्रा, तिलवाडा, दीपचन्दी, झूमरा एवं आडाचौताल।

5. संगीत से संबंधित विविध विषयों पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लेखन।

Vid diploma in performing art (V.D.P.A.)

प्रथम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

प्रायोगिक: - प्रदर्शन एवं मौखिक

समय – 40 **पूर्णांक : 100**

1. पिछले वर्ष के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।
2. पाठ्यक्रम के राग–मालकौंस, कामोद, शंकरा, पूर्वी, शुद्धकल्याण, मारवा, रामकली, बहार एवं देशकार।

   (अ) पाठ्यक्रम के रागों में किन्ही चार रागों में विलम्बित ख्याल (आलाप, तानों सहित) अथवा विलम्बित गत/ख्याल अथवा मसीतखानी गत (विस्तृत आलाप, स्थायी, अंतरा, तानों/तोडों, तिहाई एवं झाला सहित) का प्रदर्शन।

   (ब) पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में मध्यलय रचना, ख्याल (आलाप, बोल–तानों एवं तानों सहित) का प्रदर्शन अथवा मध्यलय रचना/रजाखानी गत (आलाप एवं तानों/तोडों, तिहाई सहित) का अपने वाद्य पर वादन।

   (स) पाठ्यक्रम के किसी एक राग में ध्रुपद (दुगुन, तिगुन, चौगुन सहित), एक धमार (दुगुन, तिगुन, चौगुन सहित) तथा एक तराना का गायन, अथवा अपने वाद्य पर तीनताल के अतिरिक्त अन्य ताल में एक रचना का आलाप एवं तानों/तोडों तिहाई सहित प्रदर्शन।

3 सुगम संगीत की किसी रचना का स्वरलय में गायन अथवा अपने वाद्य पर प्रदर्षन।

4 पाठ्यक्रम के निम्नलिखित तालों का ताली देकर प्रदर्शन (ठाह, दुगुन व चौगुन साहित)
तीनताल, एकताल, चौताल, झपताल, रूपक, तीव्रा, तिलवाडा, दीपचन्दी, झूमरा, आडाचौताल और धमार।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन

परिशिष्ट क्र.–07

Vid diploma in performing art (V.D.P.A.)

अंतिम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

प्रथम प्रश्न पत्र(संगीत शास्त्र)

समय 3 घण्टे पूर्णांक :100

1. गांधर्व गान एवं मार्ग–देशी का सामान्य परिचय। निबन्ध एवं अनिबद्ध गान की सामान्य जानकारी एवं अनिबद्ध के अंतर्गत रागालाप्ति और रूपकालाप्ति के भेद–प्रभेदों का अध्ययन।
2. भरत के श्रुति निदर्शन की चतुःसारणा का परिचय।
3. वीणा के तार पर पं. अहोबल द्वारा शुद्ध–विकृत स्वरों की स्थापना और पं. श्री निवास द्वारा उनका स्पष्टीकरण।
4. थाट राग वर्गीकरण का सामान्य परिचय। शुद्ध, छायालग एवं संकीर्ण रागों का वर्गीकरण समय–सिद्धांत के अनुसार रागों का वर्गीकरण।
5. गणितानुसार हिन्दुस्तानी संगीत के 32 और कर्नाटक संगीत के 72 मेलों की निर्माण विधि स्वरों की संख्या के आधार पर एक थाट से 484 राग बनाने की विधि।
6. जीवनियॉ एवं सांगीतिक योगदान :–
   उस्ताद फैयाज खॉ, उस्ताद बडे गुलाम अली खॉ, पं. ओमकारनाथ ठाकुर, पं. रविशंकर, उ. बिस्मिल्लाह खॉ।

Vid diploma in performing art (V.D.P.A.)

अंतिम वर्ष गायन/स्वरवाद्य–द्वितीय प्रश्न पत्र

संगीत के क्रियात्मक सिद्धांत

समय 3 घण्टे पूर्णांक :100

1. पाठ्यक्रम के निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय परिचय एवं पिछले पाठ्यक्रमों के रागों से तुलनात्मक अध्ययन :– छायानट, पूरियाधनाश्री, जयजयवन्ती, वसंत, सोहनी, पूरिया, ललित, गौडसारंग एवं कालिंगडा।
2. निम्न अ एवं ब को भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लिखने का अभ्यास।

   (अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिये :–

   पाठ्यक्रम के चार रागों का आलाप तथा तानों सहित प्रदर्शन।

   पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक मध्यलय ख्याल (आलाप तथा तानों सहित)

   एक ध्रुपद, एक धमार (दुगुन, तिगुन एवं चौगुन सहित) एवं एक तराना

   (ब) स्वर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये :–

   पाठ्यक्रम के चार रागों में एक–एक विलम्बित गत अथवा मसीतखानी गत (आलाप, तानों, तोडों सहित)

   पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक मध्यलय अथवा रजाखानी गत (आलाप, तानों, तोडों सहित)

   पाठ्यक्रम के किसी एक राग में तीनताल के अतिरिक्त अन्य ताल में एक रचना।
3. आड, कुआड एवं बिआड की परिभाषा व परिचय। तीनताल, दादरा, कहरवा, झपताल एवं एकताल के ठेकों को आड की लयकारी (3/2) में लिखने का अभ्यास।
4. स्वरलिपि एवं उसकी उपयोगिता। भारत में प्रचलित स्वरलिपियों का सामान्य ज्ञान।
5. संगीत से संबंधित विविध विषयों पर लगभग 500 शब्दों में निबंध लेखन।

Vid diploma in performing art (V.D.P.A.)

अंतिम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

प्रायोगिक: - प्रदर्शन एवं मौखिक

समय : 40 मिनिट पूर्णांक : 100

1. पिछले वर्ष के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।
2. पाठ्यक्रम के राग –छायानट, पूरियाधनाश्री, जयजयवन्ती, वसंत, गौडसारंग, सोहनी, पूरिया, ललित एवं कालिंगडा।

   (अ) पाठ्यक्रम के रागों में किन्हीं चार रागों में विलम्बित ख्याल (आलाप तानों सहित) अथवा विलम्बित गत/ख्याल अथवा मसीतखानी गत (विस्तृत आलाप, स्थायी, अंतरा, तानों/तोडों सहित) का प्रदर्शन।

   (ब) पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में मध्यलय रचना ख्याल (आलाप, बोलतानों एवं तानों सहित) का प्रदर्शन अथवा मध्यलय रचना/रजाखानी गत (आलाप एवं तानों/तोडों, तिहाई सहित) का अभ्यास।

   (स) पाठ्यक्रम के किसी एक राग में ध्रुपद (दुगुन, तिगुन, चौगुन एवं छःगुन सहित) एक धमार (दुगुन एवं चौगुन सहित) एक तराने का गायन अथवा अपने वाद्य पर तीनताल से भिन्न पृथक अन्य ताल में एक रचना का आलाप एवं तानों/तोडों, तिहाई सहित प्रदर्शन।
3. किसी सुगम संगीत की रचना का स्वर लय में गायन अथवा अपने वाद्य पर प्रदर्शन।
4. पाठ्यक्रम के निम्नलिखित तालों का हाथ से ताली देकर प्रदर्शन :–

   (अ) तीनताल, कहरवा, दादरा, एकताल, चौताल का ठाह और चौगुन सहित प्रदर्शन।

   (ब) झपताल, रूपक, तीव्रा, तिलवाडा, दीपचन्दी, झूमरा, आडाचौताल और धमार का ठाह व चौगुन में प्रदर्शन।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9. हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10. चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11. संगीत शास्त्र – श्री तुल

परिशिष्ट क्र.–08

kala Ratna diploma in performing art (K.R.D.P.A.)

पूर्वार्द्ध गायन/स्वरवाद्य

प्रथम प्रश्न पत्र

संगीत शास्त्र के सिद्धांत एवं इतिहास

समय : 3 घण्टे **पूर्णांक : 100**

1. पं. शारंगदेव की चतुःसारणा का अध्ययन। बिलावल एवं भैरव थाट में मूर्च्छना के आधार से अन्य थाटों की उत्पत्ति।

2. स्वर–प्रस्तार, खण्डमेरू, नष्ट और उद्दिष्ट विधि का अध्ययन।

3. रागांग वर्गीकरण का परिचय। कल्याण, भैरव व तोडी रागांगों का विशेष अध्ययन।

4. घराने का अर्थ एवं महत्व। ख्याल के दिल्ली, ग्वालियर व पटियाला घरानों का परिचय एवं उनकी गायन शैली की विशेषताओं का अध्ययन।

5. वीणा (रूद्रवीणा) का रामपुर घराना, इमदादखानी सितार सुरबहार का घराना एवं हाफिज अली खॉ के सरोद घराने का परिचय। गायन विधा के परिप्रेक्ष्य में तानसेन और उनके वंशजों की शिष्य परम्परा की जानकारी तथा सेनिया घराने के मुख्य कलाकारों का परिचय।

6. विभिन्न प्रकार की बंदिशों एवं गतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन। काव्य और संगीत तथा छन्द एवं ताल का संबंध।

7. भारतीय संगीत के वाद्यों के वर्गीकरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन। रूद्रवीणा, सितार, सुरबहार, सारंगी, शहनाई वाद्यों की उत्पत्ति और विकास का अध्ययन।

8. सांगीतिक योगदान :– पं. कृष्णराव पंडित, अमीर खॉ (सितार), उस्ताद अल्लारखॉ, पं. पर्वतसिंह, पं. कुदऊ सिंह, विदुषी गंगूबाई हंगल एवं पं. बलवंतराय भट्ट (भावरंग)

kala Ratna diploma in performing art (K.R.D.P.A.)

पूर्वार्द्ध गायन/स्वरवाद्य

द्वितीय प्रश्न पत्र– निबंध रचना एवं राग विवरण

समय : 3 घण्टे **पूर्णांक : 100**

1. न्यूनतम 600 शब्दों में संगीत विषयक निबंध।
2. दिये गये पद्यांश अथवा वाद्यगत बोल रचना को पाठ्यक्रम के उपयुक्त राग व ताल को चुनकर उसमे निबद्ध करना।
3. पाठ्यक्रम के रागों में आलाप लेखन। तान एवं तिहाई रचना के साथ।
4. निम्नलिखित रागों का विस्तृत षास्त्रीय विवरण तथा तथा पूर्व पाठ्यक्रमों से समानता रखने वाले रागों के साथ तुलनात्मक अध्ययन :–
   पूरिया कल्याण, अहीर भैरव, मारूबिहाग, बिलासखानी तोडी, जोग, श्यामकल्याण, नंद, चन्द्रकौंस, गुर्जरी तोडी, शुद्धसारंग।
5. राग खमाज, भैरवी, पहाडी अथवा शिवरंजनी में से किसी एक राग में ठुमरी या टप्पा अथवा धुन।

kala Ratna diploma in performing art (K.R.D.P.A.)

पूर्वार्द्ध गायन/स्वरवाद्य

प्रायोगिक:-1 राग परिचय प्रदर्शन एवं मौखिक

समय : 1 घण्टा **पूर्णांक :100**

1. पिछले वर्ष के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति। निम्नलिखित रागों का विस्तृत शास्त्रीय विवरण तथा पूर्व पाठ्यक्रमों से समानता रखने वाले रागों के साथ, तुलनात्मक अध्ययन।
   (अ) पूरिया कल्याण, श्याम कल्याण, मारूबिहाग, बिलासखानी तोडी, जोग, अहीर भैरव, गुर्जरी तोडी, नंद, चन्द्रकौंस एवं शुद्धसारंग। उपरोक्त रागों में से 5 रागों में बडा ख्याल या विलम्बित रचना एवं सभी रागों में मध्यलय की रचना का विस्तृत गायकी या तंत्रकारी सहित प्रदर्शन।
   (ब) राग खमाज, भैरवी, पहाडी अथवा शिवरंजनी में से किसी एक राग में ठुमरी, टप्पा या दादरा का गायन, वाद्य के परीक्षार्थियों द्वारा इन रागों में से किसी एक राग में त्रिताल के अतिरिक्त रचना अथवा धुन का प्रदर्शन।
2. पाठ्यक्रम के रागों में नोम–तोम के आलाप एवं उपज सहित एक ध्रुपद (दुगुन, तिगुन, चौगुन एवं छःगुन सहित), एक धमार (दुगुन, तिगुन, एवं चौगुन सहित), एक तराना अथवा चतुरंग गायकी सहित एवं वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये त्रिताल से भिन्न किन्हीं दो तालों में रचना (आलाप, तान/तोडा सहित) बजाने का अभ्यास एवं प्रदर्शन।

kala Ratna diploma in performing art (K.R.D.P.A.)

पूर्वार्द्ध गायन/स्वरवाद्य

प्रायोगिक:-2 मंच प्रदर्शन पसंदीदा राग

समय : 45 मिनिट **पूर्णांक : 100**

1. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से किसी एक राग का प्रदर्शन ।
2. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से परीक्षक द्वारा दिये गये पांच रागों में से किसी एक राग की प्रस्तुति।
3. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से किसी एक राग में ठुमरी, टप्पा, तराना, त्रिवट, चतुरंग अथवा धुन का प्रदर्शन।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9. हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10. चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11. संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन
12. भारतीय संगीत का इतिहास – श्री उमेश जोशी
13. निबंध संगीत – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
14. निबंध संगीत – श्री आर. एन. अग्निहोत्री
15. तन्त्री वादन की वादन कला – डॉ. प्रकाश महाडिक

परिशिष्ट क्र.–09

kala Ratna diploma in performing art (K.R.D.P.A.)

अंतिम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

शास्त्र–प्रथम प्रश्न–पत्र

संगीत शास्त्र के सिद्धांत एवं इतिहास

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

1. श्रुति और स्वर का संबंध। प्रमाण श्रुति का अध्ययन। स्वर संवाद, स्वर अंतराल का अध्ययन।

2. जाति की परिभाषा व सामान्य अध्ययन। प्राचीन दशाविध राग वर्गीकरण (ग्राम राग आदि), राग रागिनी पद्धति का परिचय। थाट राग वर्गीकरण का आलोचनात्मक विवेचन। सारंग, मल्हार तथा कान्हडा रागांगों का विशेष अध्ययन।
3. वर्तमान संदर्भ में घरानों का औचित्य। ख्याल के आगरा, किराना तथा जयपुर घरानों का परिचय एवं उनकी गायन शैलियों का अध्ययन।
4. बाबा उस्ताद अलाउद्दीन खॉ का मैहर (सितार एवं सरोद घराना), उस्ताद मुश्ताक अली खॉ का सितार घराना।
5. आधुनिक वृन्दगान एवं वृन्दवादन की जानकारी। (भारतीय संगीत के परिप्रेक्ष्य में) सरोद, संतूर, विचित्रवीणा, तानपुरा, बेला, बांसुरी वाद्यों की उत्पत्ति और विकास का अध्ययन। आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों का परिचय।
6. सौंदर्य शास्त्र की दृष्टि से राग एवं रस का पारस्परिक संबंध।
7. पं. रातंजनकर, पं. भीमसेन जोशी, उस्ताद अमीर खॉ, पं. कुमार गंधर्व, उस्ताद अब्दुल हलीम जाफर खॉ, पं. हरिप्रसाद चौरसिया, पन्नालाल घोष, पं. वी. जी. जोग, डॉ एन. राजम् का जीवन परिचय तथा उनका सांगीतिक योगदान।

kala Ratna diploma in performing art (K.R.D.P.A.)

अंतिम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

शास्त्र–द्वितीय प्रश्न–पत्र

निबंध रचना एवं राग विवरण

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

1. न्यूनतम 600 शब्दों में संगीत विषयक निबंध।
2. दिये गये पद्यांश अथवा वाद्यगत बोल रचना को पाठ्यक्रम से उपयुक्त राग व ताल को चुनकर उसमें निबद्ध करना।
3. पाठ्यक्रम के रागों में आलाप एवं तान लेखन।
4. अंकों के माध्यम से विभिन्न लयकारियों को तालिपि में लिखने का ज्ञान। प्रचलित तालों को डेढ गुन (3/2), पौन गुन (3/4), सवा गुन (5/4) इन लयकारियों में लिखने का अभ्यास।
5. निम्नलिखित रागों का विस्तृत शास्त्रीय विवरण तथा पूर्व पाठ्यक्रमों में समानता रखने वाले रागों के साथ तुलनात्मक अध्ययन।

   दरबारी कान्हडा, आभोगी कान्हडा, नायकी कान्हडा, मियॉ की मल्हार, मध्यमादी सारंग, रागेश्री, जोगकौंस, मधुवंती, देवगिरी बिलावल, एवं भटियार।

   टीप :– कुल 10 राग हैं।

kala Ratna diploma in performing art (K.R.D.P.A.)

अंतिम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

प्रायोगिक:-1 राग परिचय प्रदर्शन एवं मौखिक

समय : 1 घण्टा **पूर्णांक : 100**

1. पिछले वर्ष के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति। निम्नलिखित रागों में से किन्हीं 5 रागों में एक बडा ख्याल या विलम्बित रचना तथा सभी रागों में छोटा ख्याल या मध्य लय की रचना(विस्तृत गायकी या तंत्रकारी सहित प्रदर्शन)।

(अ) दरबारी कान्हडा, आभोगी कान्हडा, नायकी कान्हडा, मियॉ की मल्हार, मध्यमादी सारंग, रागेश्री, जोगकौंस, मधुवंती, देवगिरी बिलावल, एवं भटियार।

(ब) राग देस, तिलंग, भैरवी एवं पीलू में से किसी एक राग में ठुमरी या टप्पा (गायन के विद्यार्थियों के लिये) तथा इन्हीं रागों में से किसी एक राग में धुन का प्रदर्शन (वाद्य के विद्यार्थियों के लिये)

2. पाठ्यक्रम के रागों में नोम–तोम के आलाप उपज सहित एक ध्रुपद (दुगुन, तिगुन, चौगुन एवं छःगुन सहित),

त्रिताल के अतिरिक्त अन्य दो तालों में रचनाओं का आलाप तान सहित वादन

kala Ratna diploma in performing art (K.R.D.P.A.)

अंतिम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

प्रायोगिक:- 2 मंच प्रदर्शन पसंदीदा राग

समय : 45 मिनिट पूर्णांक : 100

1. निर्धारित पाठ्यक्रम में से परीक्षार्थी द्वारा किसी एक राग का अपनी इच्छानुसार बडा ख्याल अथवा विलम्बित अथवा मसीतखानी गत की रचना का प्रदर्शन। (विस्तृत गायकी/तंत्रकारी सहित)

2. परीक्षक द्वारा दिये गये पॉच रागों में से किसी एक राग की प्रस्तुति।

3. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से किसी एक राग में ठुमरी, दादरा अथवा धुन का प्रदर्शन

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9. हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10. चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11. संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन
12. भारतीय संगीत का इतिहास – श्री उमेश जोशी
13. निबंध संगीत – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
14. निबंध संगीत – श्री आर. एन. अग्निहोत्री
15. तन्त्री वादन की वादन कला – डॉ. प्रकाश महाडिक

परिशिष्ट क्र.–10

Sangeetika juniour diploma in performing art (S.J.D.P.A.)

(सुगम संगीत)

सैद्धांतिक

समय : 3 घण्टा पूर्णांक : 100

1 भारत में प्रचलित प्रमुख संगीत पद्धतियों की संक्षिप्त जानकारी।

2 सुगम संगीत में प्रयोंग किये जाने वाले निम्नलिखित वाद्यों की बनावट (सचित्र) एवं वर्णनः–

बांसुरी, तबला, ढोलक, डफ, मंजीरा, बैन्जो (बुलबुल तरंग), तानपुरा।

3 परिभाषा एवं वर्णन :–

संगीत, नाद, स्वर, सप्तक, अलंकार, (पल्टे), आरोह, अवरोह, पकड, थाट, राग, आश्रयराग, आलाप, तान।

1. गीत, भजन, गजल एवं लोकगीत की संक्षिप्त जानकारी, विशेषताएँ एवं तुलनात्मक अध्ययन।
2. ख्याल, ठुमरी, तराना, कव्वाली, भावगीत, अभंग, रविन्द्र संगीत, नजरूल गीत आदि की संक्षिप्त जानकारी।
3. पं. भातखण्डे निर्मित स्वरलिपि–ताललिपि पद्धति की जानकारी।
4. निम्नलिखित तालों का ताललिपि में लेखन :–

   दादरा, रूपक, कहरवा, एकताल, त्रिताल।
5. सीखे हुए गीत, भजन एवं गजलों की रचनाएँ लिखकर उनका भावार्थ स्पष्ट करना।
6. "वृन्दवादन" (कोरस) एवं "वाद्यवृन्द" की संक्षिप्त जानकारी।
7. सुगम संगीत विषयक निबंध का लगभग 300 शब्दों में लेखन।
8. निम्नलिखित रचनाकारों का संक्षिप्त जीवन परिचय :–

   हरिवंशराय बच्चन, गोपालदास, नीरज, मीराबाई, सूरदास, मिर्जागालिब, बहादुरशाह जफर।

Sangeetika juniour diploma in performing art (S.J.D.P.A.)

सुगम संगीत

प्रायोगिकः- प्रदर्शन एवं मौखिक

समय : 20 मिनिट पूर्णांक : 100

1. आकाशवाणी द्वारा अनुमोदित रचनाकारों की रचनाओं का गायन :–
   (चार–चार) गीत, भजन, गजलें कुल 12 रचनाएँ – (प्रत्येक रचना पृथक रचनाकार की होना अनिवार्य है।) (प्रत्येक रचना की संगीत रचना मौलिक हो।)
2. राग यमन, बिलावल, खमाज, काफी एवं भैरव रागों के आरोह अवरोह एवं पकड तथा इनमें से किसी एक राग में मध्यलय ख्याल (5 आलाप एवं 5 तानों सहित) का गायन।
3. भारत में प्रचलित किन्हीं दो प्रदेशों के लोकगीतों का गायन। (कुल दो लोकगीत, दोनों पृथक प्रदेशों के होना अनिवार्य है।)
4. राष्ट्रगान (जनगणमन) तथा राष्ट्रगीत (वन्देमातरम) (आकाशवाणी अनुमोदित राग देस पर आधारित रचना) कर सस्वर, लय–तालबद्ध गायन।
5. हारमोनियम बजाते हुए दस अलंकारों का गायन।
6. निम्नलिखित तालों की हाथ से ताली देकर ठाह, दुगुन में पढन्त :–
   दादरा, रूपक, कहरवा, रूपक एवं त्रिताल।

प्रायोगिक अंक विभाजन

गीत	15 अंक
भजन	15 अंक
गजल	15 अंक
लोकगीत	15 अंक
मध्यलय	10 अंक
राष्ट्रगान एवं राष्ट्रगीत	10 अंक
हारमोनियम बजाकर गायन	10 अंक
हाथ पर ताल प्रदर्शन	10 अंक
	.....
	100 अंक
	.....

परिशिष्ट क्र.–11

Sangeetika senior diploma in performing art (S.S.D.P.A.)

सुगम संगीत

सैद्धांतिक

समय : 3 घण्टे पूर्णांक :100

1. जूनियर डिप्लोमा के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।
2. सुगम संगीत में प्रयोग किये जाने वाले निम्नलिखित वाद्यों की बनावट (सचित्र) एवं वर्णन : हारमोनियम, सितार, वायलिन, सारंगी, स्पेनिष गिटार, नाल, इलेक्ट्रॉनिक वाद्य (की–बोर्ड, ऑक्टोपेड, इलेक्ट्रॉनिक तानपुरा)
3. वाद्य वर्गीकरण की जानकारी (सुषिर, तंतु, ताल वाद्य आदि)
4. परिभाषाएँ एवं वर्णन :–
   मीड, कण, खटका, मुरकी, गमक, वर्ण, लय , ताल, मात्रा, सम, खाली, भरी, ठेका, आवर्तन।
5. निम्नलिखित सांगीतिक विधाओं की संक्षिप्त जानकारी :–
   शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, लोक संगीत एवं चित्रपट संगीत।
6. निम्नलिखित तालों का तालिपि में लेखन ठाह, दुगुन, चौगुन सहित :–
   झपताल, दीपचन्दी, धुमाली, खेमटा, चांचर, भजनी ठेका।
7. संगीत विषयक निबंध का लगभग 400 शब्दों में लेखन।
8. निम्नलिखित रचनाकारों का संक्षिप्त परिचय :–
   कबीरदास, तुलसीदास, गुरूनानक, महादेवी वर्मा, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, जयशंकर प्रसाद, मीर–तकी–मीर, फैज अहमद फैज, जिगर मुरादाबादी।

Sangeetika senior diploma in performing art (S.S.D.P.A.)

सुगम संगीत

प्रायोगिकः- प्रदर्शन एवं मौखिक

समय : 20 मिनिट **पूर्णांक : 100**

1. पिछले वर्ष के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।आकाशवाणी द्वारा अनुमोदित रचनाकारों की रचनाओं का गायन :
   (दो–दो गीत, भजन, गजलें कुल छः, सभी पृथक रचनाकारों की तथा मौलिक संगीत रचनाएँ)
2. निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाओं का गायन :
   (दो–दो गीत, भजन, गजलें कुल छः सभी पृथक रचनाकारों की तथा मौलिक संगीत रचनाएँ)
   तुलसीदास, सूरदास, कबीरदास, गुरूनानक, मीराबाई, सुमित्रानन्द पंत, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, गोपालदास, नीरज, जयषंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, मिर्जा गालिब, बहादुरशाह जफर, फैज अहमद फैज, शकील बदायुनी, जिगर मुरादाबादी, मीरतकी मीर।
3. उपरोक्त रचनाओं में से किसी एक रचना में उपज, बढत आदि सहित गायन।
4. एक स्वागत गीत एवं देशभक्ति गीत का गायन **(संगीत रचना मौलिक होना अनिवार्य है।)**
5. राग पूर्वी, मारवा, आसावरी, तोडी एवं भैरवी के आरोह, अवरोह, पकड तथा इनमें से किसी एक राग के मध्यलय ख्याल का गायन, पॉच आलाप एवं पॉच तानों सहित।
6. भारत में प्रचलित किन्हीं दो लोकगीतों का गायन। **(दोनों पृथक प्रदेशों के हों)**
7. निम्नलिखित तालों का हाथ से ताली देकर ठाह, दुगुन एवं चौगुन सहित प्रदर्षन :–
   दादरा, रूपक, कहरवा, झपताल, एकताल, दीपचन्दी, त्रिताल।

प्रायोगिक अंक विभाजन

गीत	15 अंक
भजन	15 अंक
गजल	15 अंक
लोकगीत	15 अंक
उपज, बढत सहित रचना	10 अंक
मध्यलय ख्याल	10 अंक
ताल प्रदर्शन	10 अंक
देशभक्ति गीत अथवा स्वागत गीत	10 अंक
	.....
	100 अंक
	.....

Syllabus Designed By Dr. Sanjay Kumar Singh

H.O.D.